Dharmapala

Q Discuss career and achievements of Dharmapala.

Ans धर्मपाल बंगाल के पालवंशीय उत्तरी सम्राटों और साम्राज्य निर्माताओं में से एक और था। तत्कालीन राजनीति का बहुत बड़ा सुधारक था उसकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा और राजनीतिक विचारधारा मत उत्तरी भारत के राजनीतिक इतिहास में एक शक्ति संघर्ष के नये युग की शुरुआत करती है जिसमें वह अपने प्रबल विरोधियों द्वारा दबाये जाने के बावजूद परिस्थिति विशेष से लाभान्वित होकर अपने छोटे से पैतृक पाल साम्राज्य को उत्तरी भारतीय साम्राज्य में परिवर्तित करने का श्रेय जाता है।

धर्मपाल पाल वंश के संस्थापक गोपाल का पुत्र था और उत्तराधिकारी। उसने संभवतः आठवीं शताब्दि के अंतिम चतुर्थांश के प्रारम्भ में बंगाल के राज सिंहासन को सुशोभित किया होगा। शासक

रूप में उसे मगध (दक्षिण भारत) और पुण्ड्रवर्द्धन
बंगाल (उत्तरी बंगाल) का पैतृक साम्राज्य मिला होगा।
इस छोटे से साम्राज्यवादी आधारशिला पर
धर्मपाल ने तत्कालीन उत्तरी भारतीय राज-
नीतिक शक्ति संघर्ष में एक महान नायक का
पाठ अदा किया।

जिस समय धर्मपाल राजसिंहासन
आरूढ़ हुआ, उस समय उत्तरी भारत का राजनीतिक
गगन पूर्ण धूमिल था। जिसके कारण
उभरी उदित नयी शक्तियों के बीच साम्राज्य-
वादी संघर्ष का रंगमंच होना स्वाभाविक था।
इस समय कन्नौज, जो हर्ष के समय अपने
साम्राज्यवादी ख्याति और आर्थिक सम्पन्नता
के कारण मगध की समता कर रहा था,
कमजोर आयुध वंशीय राजाओं के द्वारा शासित
होने के कारण इन नयी शक्तियों के लिए
आकर्षण का केन्द्र बन गया था जिसके
कारण बंगाल के पाल, गुजरात के
गुर्जर प्रतिहार और दक्षिण के राष्ट्रकूटों के

बीच शक्ति संघर्ष का मुख्य केन्द्र बना। जो कि उत्तरी भारत के प्रारंभिक मध्यकालीन इतिहास में त्रिपक्षीय युद्ध के नाम से विख्यात है)

इस युद्ध का प्रारंभ पाल नरेश धर्मपाल की साम्राज्यवादी नीति के कारण हुआ। जिसने अपनी शक्ति का विस्तार पश्चिम की ओर मध्य प्रदेश में किया। धर्मपाल ने कन्नौज के आयुध वंशीय राजाओं के आन्तरिक सत्ता संघर्ष से लाभ उठा कर इन्द्रायुध को राज्यच्युत कर उसके भाई चक्रायुध को गद्दी पर बैठाया। धर्मपाल की कन्नौज विजय ने उसकी शक्तियों और साम्राज्य का मध्यप्रदेश से पश्चिम राजपुताना और मेवाड़ तक सुविस्तृत कर दिया।

धर्मपाल की बढ़ती हुई साम्राज्य शक्ति प्रतिहारों के लिए खतरे की घंटी थी। अतः दोनों राज्यों के बीच शक्ति संघर्ष अवश्यम्भावी बन गया। ~~समकालीन ताम्रपत्र~~ भोज के ग्वालियर अभिलेख के अनु... इस युद्ध में गौड़ प्रशासक धर्मपाल की प्रतिहार नरेश वत्सराज के हाथों करारी हार हुई

परिणामत: धर्मपाल के नये साम्राज्य ~~के~~ (राजपुताना और मेवाड़) प्रतिहार साम्राज्य में मिल गया। यह युद्ध 783-84 ई० के आसपास संभवत: यमुना नदी के दोआब में लड़ा गया।

परन्तु वत्सराज अपनी विजय का उपभोग भी नहीं ~~पाया~~ था कि ~~[illegible]~~ राष्ट्रकूट शासक ध्रुव अपनी शक्ति का विस्तार करता हुआ उत्तरी भारत के सत्ता संघर्ष के रंगमंच पर एक प्रमुख राष्ट्रनायक की तरह टपक पड़ा। राधनपुर: ताम्रपत्र के अनुसार उसने वत्सराज से ~~उन देवताओं~~ (राजपुताना और मेवाड़) को छीन लिया। इतना ही नहीं अमोघवर्ष के ~~[illegible]~~ संजन पत्र के अनुसार ध्रुव ने अपनी शक्ति का विस्तार करते हुये धर्मपाल को हराया। उसका यह युद्ध गंगा के दोआब में हुआ।

राष्ट्रकूट शासक ध्रुव का त्रिपक्षीय युद्ध में पदार्पण और सफलता धर्मपाल के राजनीतिक हक में लाभदायक सिद्ध हुई। धर्मपाल ने भी इस मौके से लाभ उठाने में तनिक भी

Khalimpur Copper

नहीं की। उसके खालीमपुर ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि उसने कान्यकुब्ज पर अपना पुन: आधिपत्य कर चक्रायुध को वहां की गद्दी पर अपना शासक नियुक्त किया। इतना ही नहीं उसने अपनी शक्ति से ~~पांचाल~~, भोज, मत्स्य, मद्र, कुरु, यदु, यवन, अवन्ति, गांधार और कीर के राजाओं को अपनी अधीनता कबूल करवा कर उन सबों को कन्नौज के दरबार में उपस्थित कर अपने को उन सब का ~~अधि~~ अधिपति घोषित कर दिया। अधि

भरत आर्यावर्त देवपाल के मुंगेर ताम्रपत्र धर्मपाल के सामरिक अभियान का विवर प्रस्तुत करते हुये उसके पश्चिमोत्तर अ के आक्रमण के सिलसिले में किदार में उ के तामाति स्थान तथा ~~गोकर्ण आदि~~ अभियान के सिलसिले में गोकर्ण के उसके द्वारा संपन्न धार्मिक यज्ञों का प्रस्तुत करता है। अतः धर्मपाल उत्त लौटने के बाद सर्वद्रमम् आदेशम् पदे

हो गया/
वंश
~~प्रबल शत्रु और प्रबल और सम्राट~~
प्रतिहारों का महान शासक नागभट्ट II अपनी
अपनी राज्य की खोई हुई साम्राज्यवादी गरिमा
को पुनः स्थापित करने के लिए सक्रिय हो
उठा। उसके वंशज ~~मिहिर~~ मिहिरभोज के ग्वालियर
प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट II ने कन्नौज
पर आक्रमण कर चक्रायुध को गद्दीच्युत
किया। अतः चक्रायुध की हार प्रतिहार और
पालों के बीच भयंकर संग्राम का कारण बनी।
जिसमें पाल राजा धर्मपाल को अपने मुँह की
खानी पड़ी। साथ ही मुंगेर तक का साम्राज्य
प्रतिहारों के अधीन हो गया।

परन्तु धर्मपाल इतनी बड़ी पराजय
के बाद भी हतोत्साहित नहीं हुआ। वह ~~[illegible]~~ राष्ट्रकूट
प्रबल
सामन्त के प्रयास से राष्ट्रकूट राजा गोविंद III
को प्रतिहारों के विरुद्ध करने में सफल सिद्ध हुआ।
अमोघवर्ष के संजन ताम्रपत्र से ही पता चलता
होता है कि गोविंद III ने इलाहाबाद के आसपास
नागभट्ट II को हराया और धर्मपाल तथा चक्रायुध से
प्रमुख

इधर प्राप्त किया।

पुनः राष्ट्रकूट शक्ति का रहना धर्मपाल की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को उत्तरी भारत प्रबल कर दिया। उसके शासन काल के 32वें वर्ष में ~~[illegible]~~ ताम्रपत्र में धर्मपाल पूर्वस्थापित साम्राज्यवादी गरिमा का गान कु... मुंगेर ताम्रपत्र भी मोटे तौर पर धर्मपाल सुविस्तृत साम्राज्य को मानता है।

निष्कर्षतः ~~इस तरह~~ धर्मपाल अपने शास... के अंतिम वर्षों में ~~[illegible]~~ विशाल उत्तरी भारत का...

~~इस तरह धर्मपाल के~~ भा... इतिहास के साम्राज्यवादी और राष्ट्रनिर्मा... एक था। बंगाल के इतिहास का तो व... शासक था जिसने शशांक के स्व... साकार किया और गौड़ को उत्तरी... मंच पर प्रतिष्ठापित किया।